९. मधुर-मधुर मेरे दीपक जल !

पाठ के आँगन में

सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :
एक शब्द में उत्तर दीजिए :
१. लघुता का बंधन - सीमा
२. माँग रहे तुमसे - ज्वाला कण

(१) इस पयांश पर ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्न शब्द हों ।

उत्तर:
(अ) सीमा = कवयित्री के अनुसार लघुता का बंधन क्या है?
(आ) आँसू जल = कवयित्री ने दीपक में क्या भरने को कहा ?

(२) पद्यांश में आए उपसर्ग-प्रत्ययुक्त शब्दों को ढूँढ़कर लिखिए ।

उत्तर:
(१) उपसर्ग : (१) निश्वास (२) अनादि (३) अक्षय (४) सजल।
(२) प्रत्यय: (१) द्रुततर (२) लघुता ।

(३) पद्यांश की प्रथम पाँच पंक्तियों का सरल अर्थ लिखिए।

उत्तर: भावार्थ : [कवयित्री महादेवी वर्मा दीपक को आश्वस्त करती हैं
कि मेरे दीर्घ निश्वासों से तुम नहीं बुझोगे। वे दीपक से कहती हैं कि मैंने तुम्हारी रक्षा के लिए अपनी पलकों से भी चंचल अपने आँचल की आड़ किया है। वे दीपक से सामान्य ढंग से जलने के लिए कहती हैं ।]

कवयित्री के अनुसार सीमा ही लघुता (छोटेपन) का बंधन है। वे दीपक को अनादि (जिसका आदि न हो) कहती हैं तथा उसे घड़ियाँ न गिनने की सलाह देती हैं। वे दीपक से कहती हैं कि न नष्ट होने वाले (अक्षय) आँसुओं के संग्रह से मैं तुझमें अश्रु-जल भर देती हूँ। वे दीपक को सजल होकर जलने के लिए कहती हैं। मेरी निश्वासों से द्रुततर, सुभग न तू बुझने का भय कर; मैं अँचल की ओट किए हूँ, अपनी मृदु पलकों से चंचल ! सहज-सहज मेरे दीपक जल ! सीमा ही लघुता का बंधन, है अनादि तू मत घड़ियाँ गिन; मैं दृग के अक्षय कोषों से तुझ में भरती हूँ आँसू जल ! सजल-सजल मेरे दीपक जल !

लेखनीय
'प्रदूषण मुक्त त्योहार' इस विषय पर निबंध लिखिए ।

उत्तर : प्रदूषण मुक्त त्योहार भारत एक उत्सवप्रेमी देश है। यहाँ विभिन्न धर्मों और जातियों के लोग रहते हैं। सभी अपने-अपने त्योहार मनाते हैं। हिंदुओं के त्योहार दीवाली, गणेश चतुर्थी तथा होली पूरे देश में बड़ी धूम-धाम से मनाए जाते हैं। आजकल त्योहारों के कारण कई प्रकार के प्रदूषण फैलते हैं। गणेश चतुर्थी त्योहार के आयोजन में ज्यादातर मूर्तियाँ प्लास्टर आफ पेरिस की होती हैं। लोगों को इसकी जगह मिट्टी या

कागज की गणेश की मूर्ति बनानी चाहिए। ये मूर्तियाँ पानी में शीघ्र घुल जाती हैं। इसी प्रकार दीवाली में लोग पटाखे फोड़ते हैं। इनसे वायु प्रदूषण तथा ध्वनि प्रदूषण होता है। हमें पटाखों का प्रयोग बंद कर देना चाहिए। गणेश चतुर्थी के समय वातावरण में ध्वनि प्रदूषण बढ़ जाता है। हमें ध्वनि विस्तारक यंत्रों का उपयोग बंद कर देना चाहिए।

होली के त्योहार में भी प्रदूषण बढ़ जाता है। लोग प्राकृतिक रंगों के बदले में रासायनिक रंग का उपयोग करते है। इस प्रकार के रंग से त्वचा को बहुत हानि पहुँचती है। हमें यह प्रयत्न करना चाहिए कि हमारे प्रत्येक त्योहार प्रदूषण मुक्त हों, क्योंकि प्रदूषण हमें ही नुकसान पहुँचाता है।